ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क, जयपुर

वर्ष 97 अंक 13 पृष्ठ 16 मूल्य ₹5/- अप्रैल प्रथम प्रकाशन 05 अप्रैल से 20 अप्रैल, 2023

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं ।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा आर्यसमाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर तालकटोरा स्टेडियम दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में भारत के गृह मंत्री माननीय श्री अमित शाह जी एवं महामहिम गुजरात के राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी कार्यक्रम में भाग लेते हुए।

तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना दिवस के कार्यक्रम में भाग लेने पहुँचे आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री किशन लाल गहलोत एवं मंत्री श्री जीववर्धन शास्त्री के साथ आर्य गुरुकुल रानी बाग के छात्र व सैनिक विहार कन्या गुरुकुल की छात्रायें ।

आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री श्री जीववर्धन शास्त्री व अन्य भारत के गृह मंत्री माननीय श्री अमित शाह का स्वागत करते हुए(तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली)।

आर. एन. आई. नं. 10471/60

ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

आर्यप्रतिनिधिसभा राज. का मुखपत्र

चैत्र, शुक्लपक्ष, त्रयोदशी, सम्वत् 2080, कलि सम्वत् 5124, दयानन्दाब्द 199, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,124

संरक्षक

1. डॉ. रमेशचन्द गुप्ता, अमेरिका
2. श्री दीनदयाल गुप्त (डॉलर फाउन्डेशन)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री विजयसिंह भाटी
2. श्री जयसिंह गहलोत

सम्पादक

1. श्री जीव वर्धन शास्त्री

परामर्शक

1. डॉ. मोक्षराज

सम्पादक मण्डल

1. डॉ. सुधीर कुमार शर्मा
2. श्री अशोक कुमार शर्मा
3. डॉ. सन्दीपन कुमार आर्य
4. श्री नरदेव आर्य
5. श्री बलवन्त निडर
6. श्री ओमप्रकाश आर्य

आर्य मार्तण्ड

वार्षिक सदस्यता शुल्क	–	**रु. 100/–**
पाक्षिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 2100/–
मासिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 5100/–
षाण्मासिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 11000/–
वार्षिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 21000/–

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिध सभा राजस्थान राजापार्क,

जयपुर – 302004

0141–2621879, 9314032161

e-mail : aryapratinidhisabhrajasthan@gmail.com

मुद्रण : दिनांक 04.04.2023

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

विषयानुक्रम

– प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का उद्बोधन 04

– वैदिक साहित्य में मानव मूल्य 09

– समाचार – वीथिका 10

आर्य मार्तण्ड पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र जयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

दि राजस्थान स्टेट को–ऑपरेटिव बैंक लि.
खाता धारक का नामः–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर
खाता संख्या :– 10008101110072004
IFSC Code :- RSCB0000008
सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।
AAHAA5823D/08/2020-21/S-008/80G

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री जीव वर्धन शास्त्री ने स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजापार्क जयपुर की ओर से वी.के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से आर्य मार्तण्ड पत्रिका मुद्रित कराई और आर्य प्रतिनिधि सभा राजापार्क जयुपर से प्रकाशित सम्पादक– **श्री जीव वर्धन शास्त्री–मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का उद्‌बोधन

संकलनः– डॉ. सन्दीपन कुमार आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्मोत्सव के 200 वें वर्ष के प्रारम्भ व आर्यसमाज की स्थापना के अगले 150 वर्ष पूर्ण होने पर वर्ष भर चलने वाले कार्यक्रमों का उद्‌घाटन के अवसर पर खचाखच भरे दिल्ली के इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में 12 फरवरी 2023 रविवार के दिन आर्यों को सम्बोधन करते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा दिया गया ।

उद्‌बोधनः– कार्यक्रम में उपस्थित गुजरात के राज्यपाल श्रीमान आचार्य देवव्रत जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष सुरेश चंद्र आर्य जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य जी श्री विनय आर्य जी मंत्रिमंडल के मेरे साथी सुरेश जी मीनाक्षी लेखी जी श्री अर्जुन राम मेघवाल जी सभी प्रतिनिधि गण उपस्थित भाइयों और बहनो! महर्षि दयानंद की 200वीं जन्म जयंती का यह अवसर ऐतिहासिक है और भविष्य के इतिहास को निर्मित करने का अवसर भी है। यह पूरे विश्व के लिए मानवता के भविष्य के लिए प्रेरणा का फल है स्वामी दयानंद जी उनका आदर्श था 'कृण्वंतो विश्वमार्यम्' अर्थात हम पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाएं हम पूरे विश्व में श्रेष्ठ विचारों का मानवीय आदर्शों का संचार करें इसलिए 21वीं सदी में आज जब विश्व अनेक विवादों में फंसा है हिंसा और अस्थिरता में घिरा हुआ है तब महर्षि दयानंद जी का दिखाया मार्ग करोड़ों लोगों में आशा का संचार करता है ऐसे महत्वपूर्ण दौर में आर्य समाज की तरफ से महर्षि दयानंद जी की 200 वीं जन्म जयंती का यह पावन पर्व 2 साल चलने वाला है और मुझे खुशी है कि भारत सरकार ने भी इस महोत्सव को मनाने का निर्णय लिया है मानवता के कल्याण के लिए यह जो अविरत साधना चली है यह जो यज्ञ चला है अभी कुछ देर पहले मुझे भी आहुति डालने का सौभाग्य मिला है अभी आचार्य जी बता रहे थे यह मेरा सौभाग्य है कि जिस पवित्र धरती पर महर्षि दयानंद जी ने जन्म लिया उस धरती पर मुझे भी जन्म लेने का सौभाग्य मिला उस मिट्टी से मिले संस्कार उस मिट्टी से मिली प्रेरणा आज मुझे भी महर्षि दयानंद सरस्वती के आदर्शों के प्रति आकर्षित करती रही है मैं स्वामी दयानंद सरस्वती के चरणों में श्रद्धा पूर्वक नमन करता हूं और आप सभी को ह्‌दय से अनेक अनेक शुभकामनाएं देता हूं साथियों जिस समय महर्षि दयानंद का जन्म हुआ था तब देश सदियों की गुलामी से कमजोर पड़कर अपनी आभा अपना तेज अपना आत्मविश्वास सब कुछ खोता चला जा रहा था प्रतिपल हमारे संस्कारों को हमारे आदर्शों को हमारे मूल्यों को चूर–चूर करने की लाखों कोशिशें होती रहीं जब

किसी समाज मैं गुलामी की हीन भावना घर कर जाती है तो अध्यात्म और आस्था की जगह आडंबर आना स्वाभाविक हो जाता है मनुष्य के जीवन में देखते हैं जो आत्मविश्वास से हीन होता है वह आडंबर के भरोसे जीने की कोशिश करता है ऐसी परिस्थिति में महर्षि दयानंद जी ने आगे आकर वेदों के बौद्ध को समाज के जीवन में पुनर्जीवित किया उन्होंने समाज को दिशा दी अपने तर्कों से यह सिद्ध किया उन्होंने यह बार–बार बताया कि खामी भारत के धर्म और परंपराओं में नहीं है खामी है कि हम उनके वास्तविक स्वरूप को भूल गए हैं और विकृतियों से भर गए हैं आप कल्पना करिए एक ऐसे समय में जब हमारे ही वेदों के विदेशी भाषाओं को विदेशी नैरेटिव को गढ़ने की कोशिश की जा रही थी उन नकली व्याख्या के आधार पर हमें नीचा दिखाने की हमारे इतिहास को परंपरा को भ्रष्ट करने के अनेक विद प्रयास चलते थे तब महर्षि दयानंद जी के यह प्रयास एक बहुत बड़ी संजीवनी के रूप में एक जड़ी–बूटी के रूप में समाज में एक नई प्राणशक्ति बन करके आ गए महर्षि जी ने सामाजिक भेदभाव ऊंच–नीच छुआछूत ऐसी समाज में घर कर गई अनेक विकृतियां अनेक बुराइयों के खिलाफ एक सशक्त अभियान चलाया आप कल्पना कीजिए आज भी समाज कि किसी बुराई की तरफ मैं कुछ कहता हूं कि भाई कर्तव्य पथ पर चलना ही होगा तो कुछ लोग मुझे डांटते हैं कि आप कर्तव्य की बात करते हो अधिकार की नहीं करते अगर 21वीं सदी में यदि मेरा यह हाल है तो डेढ़ सौ दो सौ साल पहले महर्षि जी को समाज को रास्ता दिखाने में कितनी दिक्कतें आई होंगी जिन बुराइयों का ठीकरा धर्म के ऊपर फोड़ा जाता था स्वामी जी ने धर्म के प्रकाश से ही दूर किया और महात्मा गांधी जी ने एक बहुत बड़ी बात बताई थी और बड़े गर्व के साथ बताई थी कि हमारे समाज को स्वामी दयानंद जी की बहुत सारी देन है लेकिन उनमें अस्पृश्यता के विरुद्ध घोषणा सबसे बड़ी देन है महिलाओं को लेकर भी समाज में जो रूढ़ियां पनप गई थीं महर्षि दयानंद जी उनके खिलाफ भी एक तार्किक और प्रभावी आवाज बनकर उभरे महर्षि जी ने महिलाओं के खिलाफ भेदभाव का खंडन किया महिला शिक्षा का अभियान शुरू किया यह बातें डेढ़ सौ पोने दो सौ साल पहले की है आज भी कुछ समाज ऐसे हैं जहां बेटियों को शिक्षा और सम्मान से वंचित रहने के लिए मजबूर करते हैं स्वामी दयानंद जी ने यह बिगुल तब फूंका था जब पश्चिमी देशों में भी महिलाओं के लिए समान अधिकार दूर की बात थी भाइयों और बहनों उस कालखंड में स्वामी स्वामी दयानंद सरस्वती जी का पदार्पण पूरे युग की चुनौतियों के सामने उनका उठ करके खड़े हो जाना यह असामान्य था किसी भी रूप में सामान्य नहीं था इसलिए राष्ट्र की यात्रा में उनकी जीवंत उपस्थिति आर्य समाज के डेढ़ सौ साल होते हैं महर्षि जी 200 साल होते हो और इतना बड़ा जनसागर यही नहीं दुनिया भर में आज इस समारोह में जुड़ा हुआ है इतनी बड़ी जीवन की ऊंचाई क्या हो सकती है जीवन जिस प्रकार से दौड़ रहा है मृत्यु के दो सौ साल भी जिंदा रहना मुश्किल होता है 200 साल बाद भी आज महर्षि जी हमारे बीच में है और इसलिए जब भारत आजादी का अमृत काल मना रहा है तो महर्षि जी की 200वीं जन्म जयंती एक पुण्य प्रेरणा लेकर आई है महर्षि जी ने जो मंत्र तब दिए थे समाज के लिए जो तब सपने देखे थे वह आज उन पर पूरे विश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है स्वामी जी ने तब आह्वान किया था वेदों की

ओर लौटें आज देश अत्यंत स्वाभिमान के साथ अपनी विरासत के साथ गर्व कर रहा है आज देश पूरे आत्मविश्वास के साथ कह रहा है कि हम देश में आधुनिकता लाने के साथ ही अपनी परंपराओं को भी समृद्ध करेंगे विरासत भी विकास भी इसी पटरी पर देश नई ऊंचाइयों की तरफ दौड़ पड़ा है साथियों आम तौर पर दुनिया में जब धर्म की बात होती है तब उसका दायरा केवल पूजा–पाठ आस्था और उपासना उसकी रीति उसकी पद्धतियाँ उसी तक सीमित माना जाता है लेकिन भारत के संदर्भ में धर्म के अर्थ और निहितार्थ एकदम अलग हैं वेदों ने धर्म को एक संपूर्ण जीवन पद्धति के रूप में परिभाषित किया है हमारे यहां धर्म का पहला अर्थ कर्तव्य समझा जाता है पितृ धर्म, मातृ धर्म, पुत्र धर्म, देश धर्म, काल धर्म यह हमारी कल्पना है इसलिए हमारे संतो और ऋषियों की भूमिका भी केवल पूजा और उपासना तक सीमित नहीं रही है उन्होंने राष्ट्र और समाज के हर आयाम की जिम्मेदारी संभाली हॉलिस्टिक अप्रोच लिया इंक्लूसिव अप्रोच लिया उनकी इंटीग्रेटेड अप्रोच लिया हमारे यहां भाषा और व्याकरण के क्षेत्र को पाणिनी जैसे ऋषियों ने समृद्ध किया योग के क्षेत्र को पतंजलि जैसे ऋषियों ने विस्तार दिया दर्शन में फिलॉसफी में जाएंगे तो पाएंगे कपिल ने नई बौद्धिकता को नीति और राजनीति में महात्मा विदुर ने भर्तृहरि और आचार्य चाणक्य तक कई ऋषि भारत के विचारों को परिभाषित करते रहे हम गणित की बात करेंगे तो भी भारत का नेतृत्व आर्यभट्ट ब्रह्मा गुप्त और भास्कर जैसे महान गणितज्ञों ने किया उनकी प्रतिष्ठा एक ऋषि से जरा भी कम नहीं थी विज्ञान के क्षेत्र में तो कणाद् और वराह मिहिर जैसे चरक से लेकर सुश्रुत तक अनगिनत नाम है जब स्वामी दयानंद जी को देखते हैं तो हमें पता चलता है कि उस प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित रखने की कितनी बड़ी भूमिका रही है उनका आत्मविश्वास कितना गजब का होगा। भाइयों बहनो! स्वामी दयानंद सरस्वती जी अपने जीवन में केवल एक मार्ग ही नहीं बनाया बल्कि उन्होंने अनेक संस्थाओं व व्यवस्थाओं का भी काफी सृजन किया और मैं कहूंगा कि ऋषि जी अपने जीवन काल में क्रांतिकारी विचारों को लेकर के चले उसको लोगों को जीने के लिए प्रेरित किया लेकिन उन्होंने हर विचार को संस्था के साथ जोड़ा इंस्टीट्यूशनल किया और संस्थानों को जीवित किया यह संस्थाएँ अलग–अलग क्षेत्रों में कई सकारात्मक रूप से कार्य कर रही हैं परोपकारिणी सभा की स्थापना तो महर्षि जी ने खुद ने की थी आज भी प्रकाशन और गुरुकुलओं के माध्यम से वैदिक परंपरा को आगे बढ़ा रही है कुरुक्षेत्र गुरुकुल हो स्वामी श्रद्धानंद ट्रस्ट या महर्षि दयानंद सरस्वती ट्रस्ट इन संस्थाओं ने राष्ट्र के लिए समर्पित इतने ही युवाओं को घड़ा है इसी तरह स्वामी दयानंद से प्रेरित विभिन्न संस्थाएं गरीब बच्चों की सेवा के लिए उनके भविष्य के लिए सेवा भाव से कार्य कर रही हैं और हमारे यह संस्कार हैं हमारी परंपरा है मुझे याद है कि अभी जब हम टीवी पर तुर्की के भूकंप के दृश्य देखते हैं तो हम बेचैन हो जाते हैं पीड़ा होती है मुझे याद है जब 2001 में गुजरात में भूकंप आया पिछली शताब्दी का भयंकर भूकंप था उस समय जीवन प्रभात ट्रस्ट के सामाजिक कार्य और राहत बचाव में उसकी भूमिका मैंने खुद देखी है सब महर्षि जी की प्रेरणा से कार्य करते थे जो बीज स्वामी जी ने रोपा था वह आज विशाल वटवृक्ष के रूप में आज पूरी मानवता को छाया दे रहा है साथियों आजादी के अमृत महोत्सव काल में आज देश उन सुधारों

का साक्षी बन रहा है जो स्वामी दयानंद जी की भी प्राथमिकताओं में था आज हम देश में बिना भेदभाव के नीतियों और प्रयासों को आगे बढ़ते देख रहे हैं जो गरीब हैं जो पिछड़ा और वंचित है उसकी सेवा आज देश के लिए सबसे पहला यज्ञ है वंचितों को वरीयता इस मंत्र को लेकर हर गरीब के लिए मकान उसका सम्मान हर व्यक्ति के लिए चिकित्सा बेहतर सुविधा आज देश की बेटियां बिना किसी पाबंदी के रक्षा सुरक्षा से लेकर स्टार्टअप अब तक हर भूमिका में राष्ट्र को गति दे रहे हैं आज बेटियां सियाचिन में तैनात हो रही हैं फाइटर प्लेन राफेल भी उड़ा रही हैं हमारी सरकार ने सैन्य स्कूलों में बेटियों के एडमिशन उन पर जो पाबंदी थी उनको भी हटा दिया है स्वामी दयानंद जी ने आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ गुरुकुलओं के जरिए भारतीय परिवेश में ढली शिक्षा व्यवस्था की भी वकालत की थी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए देश ने इसकी भी बुनियाद मजबूत की है साथियों स्वामी दयानंद अपने जीवन जीने का एक और मंत्र दिया था स्वामी जी ने बहुत ही सरल शब्दों में उन्होंने बताया था आखिर परिपक्व कौन होता है? आप किस को परिपक्व कहेंगे स्वामी जी का कहना था और बहुत ही मार्मिक है महर्षि जी ने कहा था जो व्यक्ति सबसे कम ग्रहण करता है और जो सबसे अधिक योगदान देता है वही परिपक्व है आप कल्पना कर सकते हैं कि कितनी सरलता से कितनी गंभीर बात कह दी थी उनका यह जीवन मंत्र आज कितनी ही चुनौतियों का समाधान देता है अब जैसे इसे पर्यावरण के संदर्भ में भी देखा जा सकता है उस सदी में जब ग्लोबल वार्मिंग क्लाइमेट चेंज जैसे शब्द जब जन्म भी नहीं लिया था इन शब्दों के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था उन शब्दों के प्रति स्वामी जी को बोध कहां से आया? इसका उत्तर है हमारे वेद हमारी रिचार्ज सबसे पुरातन माने जाने वाले वेद के कितने ही गुप्त प्रकृति और पर्यावरण को समर्पित है स्वामी जी ने वेदों के ज्ञान को गहराई से समझा था उन्होंने सार्वभौमिक संदेश को उन्होंने प्रवचन में विस्तार दिया महर्षि जी वेदों के शिष्य थे और ज्ञान मार्ग के संत थे इसलिए उनका बौद्ध अपने समय से बहुत आगे का था भाइयों बहनो! जब दुनिया सस्टेनेबल डेवलपमेंट की बात कर रही है तो महर्षि जी का दिखाया मार्ग भारत के प्राचीन जीवन दर्शन को विश्व के सामने रखता है और समाधान का रास्ता प्रस्तुत करता है पर्यावरण के क्षेत्र में भारत आज विश्व के लिए एक पथ प्रदर्शक की भूमिका निभा रहा है हमने प्रकृति के समन्वय के विजन के आधार पर ग्लोबल मिशन लाइव इसका मतलब है..... हमारे लिए गर्व की बात है कि इस महत्वपूर्ण दौर में दुनिया के देशों ने जी–20 की अध्यक्षता की जिम्मेदारी भी भारत को सौंपी है हम पर्यावरण को जी–20 के एजेंटों के रूप में आगे बढ़ा रहे हैं देश के इन महत्वपूर्ण कार्यों में आर्य समाज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है आप हमारे प्राचीन दर्शन के साथ आधुनिक परिप्रेक्ष्य और कर्तव्यों से जन जन को जोड़ने की जिम्मेदारी आसानी से उठा सकते हैं इस समय देश और जैसा आचार्य जी ने वर्णन किया आचार्य जी तो समर्पित है प्राकृतिक खेती से जुड़ा व्यापक अभियान हमें गांव–गांव पहुंचाना है प्राकृतिक खेती गांव आधारित खेती हमें इसे फिर से गांव–गांव में लेकर के जाना है मैं चाहूंगा कि आर्य समाज के यज्ञों में एक आहुति इस संकल्प के लिए भी डाली जाए ऐसा ही एक और वैश्विक आह्वान भारत में मिलेट्स मोटे अनाज बाजरा ज्वार वगैरा जिन से हम परिचित हैं और

मिलेट्स को अभी हमने एक वैश्विक पहचान बढ़ाने के लिए और देश के मिलेट्स की पहचान बनाने के लिए अब उसके लिए एक नया नामकरण किया है हमने कहा है मिलेट्स को श्री अन्न इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र इंटरनेशनल मिलेटस ईयर मना रहा है और हम जानते हैं हम तो यज्ञ, यज्ञ संस्कृति के लोग हैं और हम यज्ञों में जो आहुति में सर्वश्रेष्ठ है उसी को देते हैं हमारे यज्ञों में जौ जैसे मोटे अनाज या श्री अन्न की अहम भूमिका होती है क्योंकि हम वह इस्तेमाल करते हैं जो हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ होता है इसलिए यज्ञ के साथ साथ सभी मोटे अनाज श्री अन्न देशवासियों के जीवन और आहार को उसे जीवन में ज्यादा से ज्यादा जोड़ें अपने नित्य आहार में हिस्सा बनें इसके लिए हमें नई पीढ़ी भी जागृत करना चाहिए और इस काम को आप आसानी से कर सकते हैं भाइयों बहनो! स्वामी दयानंद जी के व्यक्तित्व से भी हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है उन्होंने कितने ही स्वतंत्रता सेनानियों के भीतर राष्ट्रप्रेम की लौ जलाई थी। कहते हैं एक अंग्रेज अफसर उनसे मिलने आया और उनसे कहा कि भारत में अंग्रेजी राज की सदैव रहने की प्रार्थना करें स्वामी जी का निर्भीक जवाब था अंग्रेज अफसर को आंख से आंख मिलाकर कहा स्वाधीनता मेरी आत्मा और भारतवर्ष की आवाज है यही मुझे प्रिय है मैं विदेशी साम्राज्य के लिए कभी प्रार्थना नहीं कर सकता अनगिनत महापुरुष लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, वीर सावरकर, लाला लाजपत राय, लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, लाखों लाख स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी महर्षि जी से प्रेरित थे दयानंद जी दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालय शुरू करने वाले महात्मा हंसराज हों, गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करने वाले स्वामी श्रद्धानंद जी हों, भाई परमानंद जी हों, स्वामी सहजानंद सरस्वती हों, ऐसे कितने देव तुल्य व्यक्तित्वों ने स्वामी दयानंद सरस्वती से ही प्रेरणा पाई। आर्य समाज के पास उन महर्षि दयानंद सभी प्रेरणाओं की विरासत है आपको वह सामर्थ्य विरासत में मिला हुआ है और इसलिए देश को भी आपसे बहुत अपेक्षा है आर्य समाज के एक–एक आर्यवीर से अपेक्षा है। मुझे विश्वास है आर्य समाज राष्ट्र और समाज के प्रति इन कर्तव्य यज्ञ को आयोजित करता रहेगा यज्ञ का प्रकाश मानवता के लिए प्रसारित करता रहेगा अगले वर्ष आर्य समाज की स्थापना का 150 वां वर्ष भी आरंभ होने जा रहा है यह दोनों अवसर महत्वपूर्ण अवसर हैं और अभी आचार्य जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के मृत्यु तिथि के 100 वर्ष हो रहे हैं यह तो त्रिवेणी की बात हो गई है स्वामी दयानंद ज्ञान की ज्योति हम भी इस ज्ञान की ज्योति बनें जिन आदर्शों और मूल्यों के लिए जिए जिन आदर्शों और मूल्यों के लिए जीवन को पाया और स्वयं जहर पीकर के हमें अमृत दे करके गए हैं आजादी के अमृत काल में वह अमृत मां भारती के कोटि–कोटि देशवासियों के कल्याण के लिए शक्ति दे, सामर्थ्य दे। मैं आज आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी महानुभावों का भी अभिनंदन करता हूं जिस प्रकार से आज के कार्यक्रम को प्लान किया गया मुझे आकर के जो भी 10–15 मिनट सब चीजों को देखने का मौका मिला मैं मानता हूं प्लैनिंग मैनेजमेंट हर प्रकार के उत्तम कार्यक्रम के लिए आप सब अभिनंदन के अधिकारी हैं बहुत–बहुत शुभकामनाएं बहुत–बहुत धन्यवाद

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अन्तरंग सदस्य
सभा, आर्य समाज नींदड जयपुर

वैदिक साहित्य में मानव मूल्य

– डॉ. योगेन्द्र कुमार धामा

वेद– वेदाः स्थानानि विद्यायाः इत्यादि निर्दिष्ट समस्त प्रकार की विद्या के आदि स्थान के रूप में जानी जाने वाली ज्ञान राशि ही वेद है। विद ज्ञाने[1], विद्, सत्तायाम्[2], विदलृ लाभे[3] तथा विद् विचारणे[4] धातु से करणाधिकरण अर्थ में घञ्[5] प्रत्यय करने पर वेद शब्द सिद्ध होता है। विदन्ति जानन्ति, विद्यन्ते भवन्ति, विन्दन्ति विन्दन्ते लभन्ते, विन्दते विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्यविद्या यैर्येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदा[6] अर्थात् जिनके पढ़ने से यथार्थ विद्या का विज्ञान होता है, जिन को पढ़ के विद्वान् होते हैं, जिनसे सब सुखों का लाभ होता है और जिनसे ठीक–ठीक सत्यासत्य का विचार मनुष्यों को होता है, इससे ऋक्संहितादि का **वेद** नाम है। जैसा कि कहा गया है

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एतं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।

यद्यपि इस प्रकार की व्युत्पत्तियों से वेद शब्द साधन मात्र के रूप में परिलक्षित होता है। उसके प्राधान्य का अनुभव नहीं होता। अतः **वेदयति विश्वपदार्थान् अवगमयतीति** इस प्रकार कर्तृवाचक व्युत्पत्ति के आधार पर ही उसका प्राधान्य अथवा महत्त्व प्रकट होता है। **वेदोऽखिलो धर्ममूलम् सर्वज्ञानमयो हि सः**[8] इत्यादि मनु की उद्घोषणाओं के अनुसार निश्चित रूप से वह ज्ञान राशि मानव कल्याण की सभी युक्तियों से युक्त तथा मानव समाज के श्रेष्ठ प्रतिमानों को स्थापित करने वाली है।

मानवीय मूल्य– वैदिक साहित्य में मानवीय मूल्यों की चर्चा प्रारम्भ करने से पूर्व मूल्यों को स्पष्ट करना आवश्यक है। वस्तुतः मूल्य वे गुणाधायक तत्त्व है, जिनके आधार पर किसी वस्तु अथवा तत्त्व की गुणवत्ता का परीक्षण किया जाता है। सामान्यतया लोक में प्रचलित मूल्य शब्द किसी वस्तु की उपयोगिता अथवा गुणवत्ता को स्पष्ट करता है। जो वस्तु जितनी ज्यादा उपयोगी अथवा गुणयुक्त होती है, उसका उतना ही अधिक मूल्य होता है। यही अवधारणा अन्य स्थलों पर भी स्वीकार की जा सकती है। इसी भाव के साथ मानव जीवन से सम्बन्धित वे तत्त्व जो मानवयोनि को अन्य योनियों की अपेक्षा अधिक उपयोगी गुणयुक्त अथवा महत्त्वपूर्ण सिद्ध करते हैं, वे ही वास्तव में श्रेष्ठ मानव मूल्य हो सकते हैं। प्रकारान्तर से कवि के अनुसार इन्हें इस रूप में भी प्रकट किया जा सकता है–

आहार–निद्रा–भय–मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो, धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।[9]

अर्थात् धर्म ही वह तत्त्व है, जो मनुष्य को पशुओं से भिन्न करने का एकमात्र साधन है, क्योंकि मनुष्य में तथा पशुओं में अन्य सभी प्रक्रियाएँ समान ही हैं। मनुष्य द्वारा किया गया धर्माचरण ही उसे पशुता से मुक्त करता है। **धार्यते यः स धर्मः** के अनुसार धारण किया गया यह धर्म अथवा कर्त्तव्य का आचरण ही वस्तुतः श्रेष्ठ मानव धर्म है। धर्म को भी यद्यपि भारतीय मनीषा ने अपने–अपने अनेक माध्यमों से स्पष्ट किया है। मनु के अनुसार धैर्य, सहनशीलता, दम, चोरी न करना, पवित्रता, इन्द्रियसंयम, बुद्धि, ज्ञान, सत्य तथा क्रोध न करना ये ही धर्म के दस लक्षण है।[10] **क्रमशः....**

समाचार – वीथिका

1– 21 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन– आर्य समाज विजयनगर के तत्वावधान में रामनवमी एवं नववर्ष के उपलक्ष में 21 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। श्री भव देव शास्त्री प्रांतीय संचालक आर्य वीर दल राजस्थान के सानिध्य में इस यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री किशन लाल गहलोत, कोषाध्यक्ष श्री जय सिंह पालड़ी ,परोपकारिणी सभा के सदस्य श्री ओम मुनि जी एवं शाहपुरा, रायला ,चापांनेरी,नसीराबाद आदि अनेकों आर्य समाजों के प्रतिनिधि भी पहुंचे। इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए भवदेव शास्त्री ने कहा कि यज्ञ हमारी संस्कृति का प्रतीक है, हमें अपने सनातन धर्म को बढ़ाने के लिए सदा पुरुषार्थ करना चाहिए। श्री ओम मुनि जी ने कहा कि विजय नगर आर्य समाज आगे बढ़े, इसके लिए सभी आर्यों को पुरुषार्थ करना चाहिए । श्री किशन लाल जी गहलोत प्रधान ने कहा कि यज्ञ हमें पवित्रता सिखाता है, परमात्मा ने हम सबको यज्ञ करने का अधिकार दिया है। श्री जय सिंह पालड़ी ने सभी को प्रतिदिन यज्ञ करने की प्रेरणा दी। अंत में प्रधान जगदीश जी आर्य ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम के पश्चात भोजन प्रसाद ऋषि लंगर की व्यवस्था भी रखी गई

2– रामनवमी उपलक्ष में सुबह प्रभात फेरी निकाली गई महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास और जोधपुर की सभी आर्य समाजो के आर्यजन और आर्य वीरदल ने मर्यादा पुरषोत्तम राम के जन्म उत्सव पर रातानाडा से सीजती गेट भीतर शहर से आड़ाबाज़ार खण्डाफ़लसा जालोरी गेट होते हुवे स्मृति भवन पहुँची स्वामी श्रद्धानंद जी ने भगवान राम के जीवन पर प्रकाश डाला और कहा की भगवान राम सत्य सनातन वैदिक धर्म को मानने वाले थे हमे उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए अंत में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान किशनलाल गहलोत ने सभी का धन्यवाद किया और जोधपुरवासियों को रामनवमी की बधाई प्रेषित की

3– यजुर्वेद पारायण यज्ञ का अनुष्ठान– आर्य जगत के भामाशाह आर्य दान श्रेष्ठी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कोषाध्यक्ष महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास के यशस्वी कोषाध्यक्ष परोपकारिणी सभा अजमेर के संयुक्त मन्त्री और जोधपुर की के पंचायत समिति के उपप्रधान श्री जयसिंह गहलोत अपने परिवार के साथ मिल कर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का अनुष्ठान आचार्य वरुण देव जी के ब्रह्मत्व में दिनांक ३० मार्च से शुरु कर दिया है यह यज्ञ राष्ट्र की समृद्धि और पर्यावरण शुद्धि के लिए किया जा रहा है वे लोग भाग्यशाली होते हैं जो एसा अनुष्ठान कर पाते हैं पिछले दिनों स्मृति भवन न्यास के उपप्रधान श्री यशपाल जी ने भी चारों वेदो का पारायण यज्ञ सम्पन्न करवाया था व माता सुनंदा मुनि जी ने भी चारों वेदों का पारायण यज्ञ किया था बहुत ही सुखमय वातावरण में वेदों के मंत्रों का उच्चारण हो रहा है धन्यवाद के पात्र है हमारे जयसिंह जी गहलोत जिन्होंने प्रतिवर्ष अपने सात्विक कमाई से लाखों रुपये पात्र संस्थाओं को दान स्वरूप देते हैं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को गर्व है और स्मृति भवन न्यास को भी गर्व है जो पुरूषार्थी और परमार्थी व्यक्तित्व के धनी संस्थाओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं, तीन दिन तक चलने

वाला यह भव्य आयोजन आने वाली पीढ़ी को संस्कारवान करने में सहायक होगा, धन्यवाद।

आर्य किशनलाल गहलोत प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मन्त्री महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर

4– नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया– आर्य समाज रावतभाटा में सृष्टि नवसंवत्सर के अवसर पर प्रातःकाल यज्ञ का आयोजन किया गया. इस अवसर पर नव संवत्सर के स्वागत में वेद मंत्रों से विशेष आहुतियां प्रदान की गईं। कोटा से पधारे वेद प्रिय शास्त्री ने बताया कि आज से सृष्टि संवत् एक अरब छियानबे करोड़ आठ लाख तिरपेन हजार एक सौ चौबीस वर्ष प्रारंभ हो गया। सायंकाल आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमें विशेष सामाजिक सेवा में योगदान के लिए मंजुल मयंक, अवकाश प्राप्त शिक्षिका हेमंत गर्ग, ओ.पी. गर्ग, शिक्षक दीपक कुमार का स्वागत प्रधान विनोदकुमार त्यागी ने श्रीफल, माल्यार्पण, चंदन टीका और शाल ओढ़ाकर वेदमंत्रों के साथ अभिनंदन किया। इस अवसर पर काव्य संध्या का आयोजन किया गया। मंत्री ओम प्रकाश आर्य ने आर्य समाज के 150 वर्षों के इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए बताया कि आर्य समाज ने शिक्षा, समाज सुधार, स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, नारी उत्थान, वेदों की ओर लौटने, गुरुकुलों की स्थापना, डीएवी स्कूल, हैदराबाद सत्याग्रह जैसे बहुआयामी उल्लेखनीय कार्य किए हैं और वर्तमान में भी कर रहा है. इस अवसर पर आकाश ने 'वह देव दयानन्द मेरा' , जीपी शर्मा ने 'ओम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली', अरुण कुमार भट्ट ने 'ओंकार हुंकार भर देता', एन पंडित ने 'ओम का नाम तुम जपते रहो', कवयित्री ममता कश्यप ने 'स्वामी दयानन्द सरस्वती के ज्ञान की ज्योति से अंधकार धरा का मिटाएंगे', रमाकांत शर्मा ने 'विपरीत परिस्थितियों में जिसने लोगों को धर्म मार्ग पर चलना सिखाया वह दयानन्द सरस्वती कहलाया', दयाशंकर कश्यप ने 'हे दयानन्द सरस्वती आपको वंदन बारंबार' कविता सुनाई. विनोद कुमार त्यागी ने धन्यवाद ज्ञापित किया और बताया कि वेदों की लौटने से ही विश्व का कल्याण हो सकेगा. कार्यक्रम में मुनेन्द्र सिंह, जितेंद्र कुमार जांगिड, पंकज कुमार, एसपी चटर्जी, गायत्री देवी, इन्द्र पाल सिंह उपस्थित रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उप प्रधान नरदेव आर्य ने सभी कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं प्रेषित की. शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ.

5– आर्य समाज सांभर लेक के तत्वावधान में दिनांक 23 मार्च 2023 गुरुवार को प्रातः 9.00 बजे से दशहरा स्टेडियम सांभर लेक में नव संवत्सर 2080 के शुभारंभ पवित्र नवरात्रों में व स्वामी दयानंद सरस्वती की 200 वी जयंती के उपलक्ष में 200 कुंडीय विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ का आयोजन स्वामी सोमानंद सरस्वती करनाल के सानिध्य में किया गया, आचार्य सत्यम् आर्य ने वैदिक मंत्रों के उच्चारण से यज्ञ में आहुतियाँ डलवाई। यज्ञ में आर्य जगत् के कई विद्वान् भजनोपदेशक, सन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी गृहस्थी, युवा व बालक–बालिकाएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में भजन उपदेशक आचार्य रविदत्त जी मेधार्थी, श्रीमान अमरसिंह जी–आर्य समाज ब्यावर ने भजनों के माध्यम से स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में आर्य जगत् के विद्वान श्रीमान प्रमोद जी गांधी, श्रीमान यादराम जी, श्रीमान कृष्ण पाल जी, श्रीमती जानकी जी, श्रीमान जीववर्धन जी, श्री अवनीश जी, श्रीमती अभिलाषा जी आर्य, श्री नाथूलाल जी

शर्मा की गरिमामई उपस्थिति रही। इस विशाल समरसता यज्ञ को सफल बनाने में आर्य समाज सांभर लेक के संरक्षक श्री अतुल जी अग्रवाल, प्रधान श्री अशोक कयाल, मंत्री डॉ ज्ञान प्रकाश दायमा, कोषाध्यक्ष श्री द्वारका प्रसाद सोनी, उप प्रधान श्री तेजपाल प्रजापत, सह सचिव श्री संजय तोषनीवाल, श्री नितेश गोयल, श्री राहुल अग्रवाल, सह कोषाध्यक्ष श्री नंदकिशोर सांवरिया, सदस्य श्री अरुण जी व्यास, श्री पवन अग्रवाल, श्री मनीष प्रजापत, श्री त्रिलोक सैनी का अतुलनीय योगदान समर्थन व सहयोग रहा। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य विद्या मंदिर सांभर लेक के व राजकीय दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय सांभर लेक के विद्यार्थियों व एनसीसी कैडेट्स का पूर्ण सहयोग रहा। इस 200 कुंडीय यज्ञ में जयपुर अजमेर ब्यावर सहित आसपास के कई शहरों व ग्रामीण क्षेत्र के लोगों ने सहभागिता की। आर्य समाज सांभर लेक द्वारा बाहर से पधारे समस्त अतिथियों का शॉल ओढ़ाकर व दुपट्टा पहना कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने ऋषि लंगर में प्रसाद पाया। महामंत्री डॉ. ज्ञान प्रकाश दायमा ने सभी का आभार प्रकट किया व धन्यवाद ज्ञापित किया।

6– बीकानेर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री गोवर्धन सिंह आर्य ने बताया कि महर्षि दयानंद स्मृति भवन न्यास जोधपुर एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्रीमान किशनलाल जी गहलोत, मंत्री श्री जीव वर्धन जी शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री जयसिंह जी गहलोत ने वेद प्रचार रथ के द्वारा जन–जन तक आर्य समाज एवं महर्षि दयानंद के विचारों के प्रचार एवं प्रसार हेतु कार्यक्रम चलाया है, इस कार्यक्रम के तहत 13 मार्च 2023 से कोलायत विधानसभा क्षेत्र में प्रचार रथ के संचालक स्वामी चेतनानंद जी सरस्वती के द्वारा वैदिक ज्ञान, भारतीय संस्कृति, सनातन धर्म, नारी शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार, राष्ट्रीय जागृति, जन जागृति, सामाजिक समरसता, जातिवाद तथा नशा मुक्ति के प्रवचन करके समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर करने का प्रयास निरंतर चल रहा है, इसी कार्यक्रम के तहत आज गांव सियाणा कोलायत जिला बीकानेर में श्री गोविंद राम जी मेघवाल के घर वैदिक हवन का कार्यक्रम कर वेद प्रचार किया गया।

7– आज आर्य समाज हनुमानगढ़ टाउन में रामनवमी के उपलक्ष पर हवन का आयोजन किया गया जिसमें किशन छाबड़ा जी द्वारा यज्ञ करवाया गया, मुख्य यजमान श्रीमती दीपिका वर्मा पत्नी डॉ. श्री सत्यनारायण वर्मा रही, जिसमें निम्न सदस्यों ने आहुति दी श्रीमती प्रवेश छाबड़ा, बलवंत सिंह निडर, श्रीमती पुष्प लता, श्रीमती वीणा नागपाल, श्रीमती मंजू वर्मा, श्री शरत चंद्र आर्य, श्री रवि आर्य, श्री राजेश वर्मा व बच्चों में आशुतोष वर्मा, डिंपल वर्मा, नवीन वर्मा, भूमिका वर्मा आदि उपस्थित रहे।

8– आर्य समाज में रामनवमी पर यज्ञ– श्रीगंगानगर आर्य समाज द्वारा गुरुवार को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों को याद करते हुए हवन–यज्ञ किया गया। यज्ञ–ब्रह्मा पं. नागेन्द्र शास्त्री एवं पं. विक्रान्त शास्त्री के निर्देशानुसार विधिपूर्वक यज्ञ हुआ। मंत्री धर्मेन्द्र, दीपक, रतन भटनागर, गौरमोहन, अलका, मानसी, ओमकार धनकड़, रवि, बलदेव, रामकुमार, सुभाष, प्रभावती देवी, दौलत, प्रमोद, अजय चड्ढा, आदित्य सहित उपस्थित समस्त सदस्यों व साधकों ने श्रद्धा के साथ यज्ञ में आहुति प्रदान की। रवि भटनागर ने कहा कि यदि हमें अपने जीवन में किसी भी क्षेत्र में शिक्षा लेनी हो तो

हम श्रीराम के आदर्शों से ले सकते हैं। श्रीराम ने एक आदर्श जीवन जी कर समूची मानवता के समक्ष उच्चकोटि का आदर्श स्थापित किया। उनका प्रातः व सायं यज्ञ करना आर्य संस्कृति को दर्शाता है एवं आर्य शब्द पूरी रामायण में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

9– आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया– अलवर स्वामी दयानंद मार्ग स्थित आर्य समाज में गुरुवार को आर्य समाज का स्थापना दिवस, नवसंवत्सर और बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मंगलगान, ओम का ध्वजारोहण किया गया व देशभक्ति गीत गाए गए, आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान जगदीश प्रसाद गुप्ता ने नवसंत्सर के महत्व पर प्रकाश डाला और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रदीप कुमार आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में अशोक कुमार आर्य, बृजेन्द्र देव आर्य, शिव कुमार कौशिक, कमला शर्मा, वेदप्रकाश शर्मा, हेमराज कल्ला, नरेंद्र मोहन शर्मा, ज्ञानप्रकाश मित्तल, ईश्वर देवी, सुमन आर्य, धर्मवीर आर्य, डॉ. प्रदीप, प्रेमलता गुर्जर, मानसिंह जायवाल, कृष्णलाल भाटिया, संजय भाटिया, इंद्रा भाटिया, कमल आर्य, डॉ. सीपी पालीवाल, निर्मला पारीक, वंदना जसूजा, अनुराधा पालीवाल, प्रीति अग्रवाल, सौम्या अग्रवाल, रेणू चतुर्वेदी आदि उपस्थित रहे।

10– चित्तौड़गढ़ में वेदगोष्ठी सम्पन्न– राष्ट्रवाद के लिए पन्नाधाय के बलिदान से बढ़कर कोई अन्य बलिदान नहीं है। अपने देश की रक्षा को सर्वोपरि मानते हुए पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन को राजकुमार उदय सिंह के स्थान पर रख विश्व के सर्वोच्च बलिदान का आदर्श प्रस्तुत किया। यह विचार जेएनयू के प्रो. एवं संकाय अध्यक्ष डॉ. सुधीर कुमार ने पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल में आयोजित एक संगोष्ठी में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अस्मिता एवं राष्ट्र की रक्षा के लिए महारानी पद्मिनी का सामूहिक बलिदान अविश्वसनीय एवं अकल्पनीय है।

इस अवसर पर वैदिक मिशन मुंबई के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि हमें वैदिक विचारों को पुनः अपनी जीवनचर्या में शामिल करना होगा। अमेरिका में भारत के प्रथम सांस्कृतिक राजनयिक एवं भारतीय संस्कृति के शिक्षक रहे डॉ. मोक्षराज ने कहा कि हमें अपनी महान संस्कृति के उच्च मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने की आवश्यकता है, उन्हीं मूल्यों से सशक्त व समृद्ध भारत का पुनर्निर्माण होगा।

उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष किशनलाल गहलोत, सारस्वत अतिथि जीववर्धन शास्त्री, विशिष्ट अतिथि रवि चड्ढा एवं जयसिंह गहलोत तथा वक्ता अवनीश मैत्री, सुदक्षिणा शास्त्री, इन्द्र प्रकाश यादव, देवेंद्र शेखावत ने विचार व्यक्त किए। गोष्ठी में सरला गुप्ता, राजकुमार गुप्ता, सुखलाल आर्य, अशोक शर्मा, अशोक आर्य, सुनीता आर्या, दीपक पथरिया, कर्नल सोहनलाल, शिवनारायण, कुंजीलाल पाटीदार, गुरुकुल की आचार्या नर्मदा शास्त्री, आचार्या अनुसुईया शास्त्री ब्रह्मचारिणी आशा, कामिनी, सोनल, पूनम आदि उपस्थित रहे।

11– सर्व हिन्दू समाज द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस एवम् नवसंवत्सर के उपलक्ष्य में 22 मार्च को केकडी शहर में सभी समाजों की झांकिया निकाली गई उसमे आर्य समाज केकड़ी के पदाधिकारियों ने यज्ञ करते हुए झांकी निकाल कर सभी लोगो को यज्ञ करने की प्रेरणा दी। लगभग 2 घण्टे तक शहर के विभिन्न मार्गों से निकलते हुए यज्ञमयी माहौल बनाकर वातावरण शुद्धि का कार्य किया गया तथा लोगो को यज्ञ

करने की प्रेरणा दी। इसमें यज्ञमुनि जी, रतन पंवार जी, मूलचंद महावर जी, सत्यनारायण सोनी जी, तेजमल पंवार जी, बजरंग सिकलीगर जी, अशोक जेतवाल जी, रघुवीर टेलर जी, अनिल राजोरिया जी, हेमराज नायक जी, कमलेश माली जी, गोपाल शर्मा जी आदि ने सक्रिय भूमिका निभाई।

12– भारतीय संवत्सर की कुछ विशेषताएं हैं इसलिए ये प्रयोग करना चाहिए।

1. इसकी तिथियां आप चंद्रमा की आकृति देखकर बता सकते हैं।

2. शुक्ल पक्ष सुदी अमावस्या के बाद प्रारंभ होता है इसमें चंद्रमा सायं काल अवश्य दिखाई पड़ता है। और चंद्रमा तिथि के अनुसार धीरे–धीरे बढ़ता रहता है। पूर्णिमा को चंद्रमा पूरा दिखाई पड़ता है और रात भर रहता है।

3. कृष्ण पक्ष का चंद्रमा पूर्णिमा के बाद दिखाई पड़ता है जो कि प्रातः काल अवश्य दिखाई पड़ेगा चंद्रमा की आकृति धीरे–धीरे कम होती रहती है और सायं काल देर से उगता है। अमावस्या को चंद्रमा बिल्कुल नहीं दिखाई पड़ता है।

4. यह व्यावहारिक है क्योंकि इसका ज्ञान चंद्रमा के गति के अनुसार प्राप्त किया जाता है।

5. अधिकांश भारतीय पर्व संवत्सर पंचांग के अनुसार निश्चित किए जाते हैं।

6. हमारे विवाह आदि कार्यक्रम भी संवत्सर पंचांग के अनुसार निश्चित होते हैं।

7. बिना यंत्रों के ग्रहों आदि की चाल का निर्धारण पंचांग के अनुसार कर लिया जाता है जोकि बिल्कुल सटीक है। और इसके अनुसार सूर्य ग्रहण तथा चंद्र ग्रहण का निर्धारण वर्षों पूर्व कर दिया जाता है। आजकल 100 वर्ष पूर्व तक के पंचांग उपलब्ध हैं।

पर हमारी सरकार भारतीय पंचांग को लागू करने में असमर्थ है। रविवार का अवकाश रखना यह पश्चिमी देशों की परंपरा है। हमारे यहां अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा को अवकाश रहता था। आर्य समाज का सत्संग भी रविवार को रखना पश्चिमी देशों की नकल है। हमें अपने ज्ञान पर गर्व तो है पर उस पर चलने में परेशानी है।

13– आर्य समाज पीपाड़ नगर, जोधपुर के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री शिवरतन जी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी का स्वर्गवास दिनांक 05–03–2023 को हो गया है जिनका अंत्येष्टि संस्कार आर्य समाज के पदाधिकारियों द्वारा वैदिक रीति के अनुसार किया गया। दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

10 दिवसीय निःशुल्क वैचारिक क्रांति शिविर

19 से 28 मई 2023,

स्थान– आर्य समाज रानी बाग, (शकूरबस्ती बस्ती रेलवे स्टेशन के पास) दिल्ली–34

14 से 40 वर्ष तक के स्त्री–पुरुष दोनों ही भाग ले सकते हैं।

शिवरार्थी को हिंदी लिखना–पढ़ना आना चाहिए।

भोजन, आवास आदि निःशुल्क।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

जोगेंदर खट्टर–महासचिव, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, दिल्ली मो. 9810040982

आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन जोधपुर के कोषाध्यक्ष श्री जय सिंह गहलोत अपने परिवार के साथ मिलकर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का अनुष्ठान करते हुए।

आर्य शोरूम भरतपुर पर राम जन्म शोभा यात्रा का सम्मान करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पदाधिकारी गण।

राम नवमी के पावन पर्व पर आर्य समाज मंदिर कुचेरा द्वारा विशाल शोभायात्रा का स्वागत किया गया

ब्यावर आर्य समाज द्वारा नववर्ष के उपलक्ष में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई

आर्य समाज शास्त्री नगर द्वार नव वर्ष उपलक्ष में शहर में झांकी निकाली जिसमे यज्ञ किया गया

नव संवत्सर पर आर्य समाज केकडी द्वारा निकाली गई झाँकी का विहंगम दृश्य

डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/214/2023-25 आर. एन. आई नं.10471/60

वैदिक मिशन मुंबई द्वारा पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में आयोजित वेद संगोष्ठी में बोलते हुए सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता डॉक्टर मोक्ष राज जी विद्वान गण एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पदाधिकारी गण व आयोजक डॉ श्री सोमदेव शास्त्री जी।

आर्यसमाज विजय नगर में राम नवमी के अवसर पर 21 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन। इनसेट में सभा को संबोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री किशन लाल जी गहलोत।

जोधपुर के जलोरिया बास आर्य समाज की यज्ञशाला के शिलान्यास कार्यक्रम में उपस्थित जोधपुर शहर विधायिका मनीषा जी आर्य एव आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री किशन लाल जी गहलोत।

प्रेषक:-

सम्पादक
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

प्रेषित